मुहावरे और कहावतें भी एक खिड़की हैं समाज को समझने की। उदाहरण के रूप में औरतों के बारे में जो कहावतें हैं उनसे भी अंदाजा लगता है कि समाज में औरत का क्या दर्ज़ा है। उसे कैसे उठना-बैठना और कैसे व्यवहार करना चाहिए। औरतों या लड़कियों के बारे में जो भारतीय कहावतें एकदम याद आती हैं वो हैं—

"औरत मर्द के पैर की जूती है।"

"बेटी को पालना पड़ौसी के पेड़ को पानी देने के समान है।"

"बेटे वाले तर गए, बेटियों वाले मर गए।"

"ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।"

अन्य देशों में भी ऐसी कहावतें हैं। अभी हाल ही में मैं दक्षिण कोरिया की महिला मजदूरों के संगठन के बारे में पढ़ रही थी। बहुत हिम्मत वाली महिला मजदूरों का यह संगठन मज़दूर और अन्य औरतों की शिक्षा का भी काम करता है।

इस संगठन ने एक कविता छापी है जिसका शीर्षक है "जब मुर्गी बांग देती है"। यह शीर्षक एक कोरियन कहावत से लिया है—"जब मुर्गी बांग देगी घर बरबाद होगा।" यानि बांग देना, बोलना सिर्फ़ मुर्गों या मर्दों को शोभा देता है। अगर मुर्गियां या औरतें बांग देंगीं, बोलेंगी तो अशुभ होगा, घर बरबाद होंगे। **इस कहावत को इस कविता में बड़ी खूबसूरती से बदला है। औरत बोलेगी तो कुछ बदलेगा, कुछ शुभ होगा, कुछ नया रचा जाएगा।**

मुझे कविता अच्छी लगी तो अनुवाद कर 'सबला' के पाठकों तक पहुंचाने का निश्चय किया।

जब मुर्गी बांग देती है

कमला भसीन

यहां, औरतें हैं आसमान सी
यहां, औरतें हैं सूर्य सी
यहां औरतें हैं प्रभात सी
वो रचती हैं जीवन
वो रचती हैं इतिहास
वो रचती हैं भविष्य
औरतों का रचा
जीवन इतिहास,
भविष्य हमारी
आस है।

हम आस करते आए हैं
एक मानवीय जीवन मानवीय भविष्य की
यह आस हमारे साथ रही है
उन सभी संघर्षों, वेदनाओं और
रचनाओं के लंबे दौर में
जिनसे दलित बहनें, मांएं
मांओं की मांएं जूझती आई हैं
ना जाने कब से हम सहती रही हैं
बेहूदा कहावतें
"जब मुर्गी बांग देगी तो घर बरबाद होगा"
किस किस के खिलाफ़ लड़े हैं हम?
अब हम बिना झिझक
अपनी आवाज़ उठा रहे हैं
हम कसम खाते हैं औरतों की
जो भविष्य की जननी हैं
और कहते हैं
"जब मुर्गी बांग देती है
एक अंडे का जन्म होता है"